शिलालेख

बीकानेर महाराजा अनूपसिंह कालीन शिलालेख
(1678 ई.)

प्रस्तरांकित मूल पाठ



1. ॥ संवत 1750 विरषे मिती मिगसर सुद
2. 11 वार बृहस्पति प्रोहित जी श्री फ
3. रसराम जी तत्पुत्र प्रोहित रिदै राम
4. जी देस बीकानेर री खालसे री सांढि
5. लीजता काम आया महाराजा श्री
6. अनोपसाहजी रे राज्य महि काम आ
7. या संवत 1760 विरषे मिती फा
8. ल्गुन सुद 12 वार मंगल देवली
9. चढ़ी कारीगर सूथार हसू कीवी
10. लिखत प्रोहित दुरगदास अभै
11. रामोत: चढ़ी वाहर व पिधारी च
12. ढि । पर सावत अरि पाडि । राजा
13. गुर कीधी रिदौ रवि वीं संवते राडि।

---

1. श्री गणेस नम: समत 1779 वर्षे आसाढ़ वद 11
2. वार मंगल छतरी हुई कारीगर नुरमहमद मैह
3. मदये बेटे कुजमहमद कीवी प्रोहित श्री भैरूदा
4. स कवर मोहणदास कराई लिखतु प्रो.प्रिथी
5. गज सुभभवतु कल्याणमस्तु

अनुवाद-

बीकानेर के महाराजा अनूपसिंह के शासन काल के दौरान रियासत के गाँव हियांदेसर के निवासी पुरोहित श्री फरसराम जी पुत्र पुरोहित श्री रिदैराम जी, राज्य की सांढें (मादा ऊँट) लूटेरों से वापस लेते समय परस्पर हुई झड़प में शहीद हो गये थे। इस तथ्य की

पुष्टि प्रथम लेख की अंतिम काव्यबद्ध पंक्तियों से भी होती है, जिनके अनुसार फरसराम जी राज्य की सांढ़ों को वापस लाने हेतु भेजी गई 'वहार' (चोरों एवं डकैतों को घेरने के लिए भेजी जाने वाली सैन्य टुकड़ी) का हिस्सा बने थे तथा सांढ़ों को पुनः प्राप्त करते समय वे वीरगति को प्राप्त हुए। यह घटना वि.सं. 1750/ 1693 ई. के मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि के दिन घटित हुई थी।

इस घटना के 10 वर्ष पश्चात् वि.सं. 1760/1704 ई. की तिथि फाल्गुन शुक्ला 12 अर्थात 18 मार्च 1704 ई. के दिन देवली का निर्माण किया गया था। यह निर्माण कारीगर सुथार हसु के द्वारा किया गया था, पुरोहित दुर्गादास ने उक्त लेख का लेखन किया। इसी देवल पर नीचे उल्लिखित अन्य लेख में देवल पर निर्मित छतरी का विवरण प्राप्त होता है। लेख के अनुसार विक्रम संवत् 1779 की आषाढ़ कृष्ण एकादशी, मंगलवार, अर्थात 9 जून 1722 ई. को पुरोहित भैंरूदास पुत्र मोहणदास ने कारीगर नूरमुहम्मद पुत्र कुजमुहम्मद से इस छतरी का निर्माण करवाया।

यह देवली अनेक विशेषताओं से युक्त है। इसका निर्माण बलुआ पत्थर से किया गया है तथा इस पर पुरोहित फरसराम जी को अश्वारूढ़ नायक के रूप में सुंदर कलात्मक शैली में अंकित किया गया है। इसके अतिरिक्त सूर्य एवं चंद्रमा के साथ-साथ पुष्पों और लताओं का मनोहारी अंकन भी दर्शनीय है। शिलालेख के चारों ओर ज्यामितीय अलंकरणयुक्त नक्काशी की गई है, जो इसकी कलात्मक उत्कृष्टता को और अधिक प्रभावशाली बनाती है।

लेख पठन- डॉ. राजेन्द्र कुमार
फोटो प्रेषण- कोमल राजपुरोहित
प्राप्ति स्थान- ग्राम - हियांदेसर
तहसील- नोखा, **जिला**- बीकानेर (राज.)